ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

शोध के साथ जीना होता है- शशिभूषण शीतांशु

वर्धा दि. 3 सितम्बर 2012: प्रो. पांडेय शशिभूषण शीतांशु ने एक सफल शोध के बारे में उदाहरण देते हुए कहा कि जिस तरह घर परिवार में माता-पिता, भाई बहन और दूसरे सारे रिश्तों को हम जीते हैं उसी तरह शोधकर्ता को शोध के साथ जीना होता है, तभी शोध सफल होता है। पांडेय ने यह बात महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा शोध- प्रविधि : स्वरूप और सिद्धांत विषय पर आयोजित संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि शोध करने वाले के लिए बहुत जरूरी है कि वह गहराई में जाकर तथ्यों की खोज और उनकी पड़ताल करे। उन्होंने कहा कि रूपरेखा निर्माण को समझना बहुत जरूरी है क्योंकि उसी पर शोध की सफलता निर्भर करती है। पांडेय ने अपने वक्तव्य को जारी रखते हुए कहा कि ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक शोध की ये तीन प्रमुख प्रविधियां हैं। शोध में किसी एक प्रविधि का प्रयोग ही अधिक न्यायसंगत होता है जबकि कई प्रविधियों का प्रयोग संभव नहीं है। शोध की सबसे बड़ी विशेषता उसकी मौलिकता है। शोध की आत्मा शोधकर्ता की जिज्ञासा है जिसके बिना स्तरीय शोध की कल्पना नहीं की जा सकती। शोध में विषय चयन के साथ-साथ शोधकर्ता का नजरिया भी काम करता है कि आपको किस सत्य का उदघाटन करना है और क्या छोड़ देना है। प्रो. पांडेय ने अपने पूर्व वक्ता डॉ. एस.एस. चौधरी को गागर में सागर भरकर वक्तव्य देने और शोध किस तरह स्वरूपित हो इस पर प्रकाश डालने के लिए साधुवाद और धन्यवाद ज्ञापित किया।

हबीब तनवीर सभागार में आयोजित संगोष्ठी में श्रोताओं से खचाखच भरे सभागार में अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर चित्रा माली ने कहा कि सामाजिक अनुसंधान लंबी प्रक्रिया है। सबसे महत्वपूर्ण है विषय का चयन। उन्होंने कहा कि प्रारंभ में अनुसंधान जटिल प्रतीत होता है, इसमें विचार, सिद्धांतों और प्रविधियों की जानकारी होती है। शोध में दोहराव से बचने की जरूरत महसूस होती है। क्षेत्र का निर्धारण बेहद आवश्यक होता है क्योंकि इससे शोधकर्ता भटकाव से बचता है। उपकल्पना अनुसंधान के बारे में पूर्व कल्पना और अनुमान होता है। पूर्व अध्ययन और परीक्षण जरूरी होता है। समय और व्यय का अनुमान जरूरी है ताकि भविष्य में आने वाली दिक्कतों से बचा जा सके। तथ्यों का वर्गीकरण कर और उन्हें श्रेणियों में विभाजित कर शोध पूरा किया जाता है। अगले वक्ता के रूप अनुसंधान अधिकारी पुरंदर दास ने जोर देकर किसी भी विषय पर शोध को करने से पहले सबसे महत्वपूर्ण विषय का चयन है। शोधार्थी का लक्ष्य क्या है यह विषय चयन का पहला ध्येय होता है। अपनी रुचि, प्रवृत्ति, संस्कार क्षेत्र के अनुरूप विषय का चयन होना चाहिए। दास ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिसका पूर्व ज्ञान अच्छा होगा उसका शोध कार्य उतना ही उच्चतर होगा। शोध निर्देशक का चयन सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि योग्य शोध निर्देशक के सुझाव के अनुसार ही शोधकर्ता को अपना काम करना होता है। शोध के विषय का चयन करते समय सर्वथा मौलिक और नये से नये विषय का चयन करना चाहिए और उसमें क्षेत्र में नयी जानकारियों से युक्त होना चाहिए। शोध के लिए एक समय सीमा के भीतर कार्य संपन्न होना चाहिए। मानव विज्ञान विभाग के डॉ. निशीथ राय ने कहा कि

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com

सामाजिक शोध अवलोकन पर आधारित होते हैं। सामाजिक शोध को विज्ञान के करीब लाना चाहिए। शोधकर्ता अपनी विचारधारा के अनुसार भी अध्ययन और विश्लेषण करता है। राय ने कहा कि परिकल्पना का निर्माण समाज में चल रहे प्रचलन के अनुरूप होता है। क्षेत्र की सीमाएं होती हैं और व्यक्तिनिष्ठा से बचना चाहिए। आंकड़े एकत्रित करते समय इंटरव्यू और परिचर्चा दोनों माध्यमों का प्रयोग करना चाहिए। डॉ. सतीश पावडे ने कहा कि मैं यहां सवाल खड़ा करना चाहता हूं कि यहां परफार्मिंग ओरिएंटेड कोई शोध प्रविधि मौजूद नहीं है। उन्होंने यहां रंगमंच के बारे में चर्चा करते हुए कि यह मंचन की जाने वाली विधा है जबकि इसका मूल आधार थ्योरी से है जिसके आधार पर ही संवाद अदायगी की जाती है। उन्होंने अभिनय, रंगमंच, वस्त्र सज्जा, बाल रंगमंच, कविता, कहानी का मंचन निर्देशन प्रक्रिया को लेकर किये जाने वाले शोधों में प्रविधि क्या हो क्योंकि इनका संबंध मंचन से है जबकि प्रविधि टेक्स्ट है और यह हमारी सबसे बड़ी दिक्कत है। डॉ. रवि कुमार ने संक्षेप में अपनी बात रखी। भारतीय एवं विदेशी भाषा अध्ययन केंद्र के सहायक प्रो. अनिर्वाण घोष ने भारत चीन के रिश्तों और दोनों देशों के मध्य हुए व्यापार को एक चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने चार्ट के माध्यम से साफ-साफ दिखाया कि 1950-1964 के दौरान हमारे रिश्ते सीमा विवाद के कारण किस तरह प्रभावित रहे। उन्होंने भारत चीन के राजनीतिक और व्यापारिक संबंधों को शोध के जरिए रेखांकित किया। भोपाल से आए प्रो.एस.एस. चौधरी ने अपने एक घंटे लंबे भाषण शोध प्रविधि और शोध के दौरान होने वाली दिक्कतों को बेहद संक्षेप में समझाया। डॉ. चौधरी ने कहा कि आज उदारीकरण का तीसरा फेज शुरू हो जाने के कारण समाज के पहले पायदान से लेकर अंतिम पायदान तक बदलाव बहुत तेजी से दर्ज हो रहा है। उन्होंने कहा कि शोधकर्ता द्वारा पर्यवेक्षण किया जाना बहुत जरूरी है। बुक व्यू और फील्ड व्यू को एकीकृत किया करना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें शोध के दौरान आंख, नाक और कान खुला रखना चाहिए। लीक से हटकर यदि शोध में कोई भी बात की जाती है तो फुटनोट और रेफरेंस जरूर दिया जाना चाहिए। किसी भी विषय पर उपलब्ध सूचनाओं का जांचा जाना जरूरी है। और अंत में उन्होंने शोधकर्ताओं को अपने साथ डायरी रखने की सलाह दी। कार्यक्रम का सफल संचालन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या एवं विश्वविद्यालय के प्रोफेसर उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com